E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

वक्रोक्ति अलंकार

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय

प्रकृति-

यह शब्दालंकार है।(शब्दालङ्कार का लक्षण है-'शब्दपरिवृत्यसहत्व' अर्थात् शब्द की परिवृत्ति (परिवर्तन) को न सह सकने का भाव। अर्थात् जो अलंकार शब्दविशेष की ही उपस्थिति में रहते हैं, उस शब्द का पर्याय रखते ही विनष्ट हो जाते हैं, शब्दालंकार कहे जाते हैं।)

व्युत्पत्ति-

वक्रा उक्ति इति वक्रोक्तिः।

इतिहास-

वक्रोक्ति अलंकार का संकेत भामह के 'काव्यालंकार' में प्राप्त होता है, किन्तु इसे शास्त्रीय रूप देने का श्रेय आचार्य रुद्रट को है। अतः रुद्रट ही इसके उद्भावक कहे जा सकते हैं।

लक्षण-

आचार्य मम्मट वक्रोक्ति अलंकार को परिभाषित करते हुए कहते हैं-

यदुक्तमन्यथावाक्यमन्यथाऽन्येन योज्यते।

श्लेषेण काक्वा वा ज्ञेया सा वक्रोक्तिस्तथा द्विधा।।

अर्थात् वक्ता के द्वारा, अन्य अभिप्राय से कहा गया जो वाक्य अन्य के द्वारा श्लेष अथवा काकु (ध्वनिविकार) अन्य अर्थ (वक्ता के अभिप्राय से भिन्न अर्थ) में लगा लिया जाता है, वह वक्रोक्ति नामक शब्दालंकार है और वह दो प्रकार का होता है।

स्पष्टीकरण-

आचार्य मम्मट ने शब्दालंकारों में प्रथम 'वक्रोक्ति' का निरूपण किया है। वक्रोक्ति अलंकार के प्रथम निरूपण करने का अभिप्राय यह है कि वक्रोक्ति अलंकार में वक्र उक्ति होने से ही चारुता का भान होता है। आचार्य भामह ने तो वक्रोक्ति को समस्त अलङ्कारों का उपलक्षण माना है। इसी से अर्थ में चारुत्व आता है। उपर्युक्त लक्षण के आधार पर वक्रोक्ति के निम्नांकित तत्त्व स्वीकार किए जा सकते हैं-

क) वक्ता अपने कथन को भिन्न अभिप्राय से कहे, किन्तु श्रोता उससे भिन्न अर्थ की योजना कर उसे उत्तर दे।

ख) श्रोता द्वारा वक्ता के भिन्नार्थ की कल्पना में हेतु या साधन होते हैं-श्लेष एवं काकु। काकु का अर्थ है ध्वनिविकार या ध्वनिपरिवर्तन। आवाज को विभिन्न प्रकार से परिवर्तित कर एक ही कथन के भिन्न अर्थ किए जा सकते हैं, जिससे काकु के द्वारा भी वक्ता के कथन में अन्तर आ जाता है। विधि और निषेध-हाँ और ना तक को एक ही वाक्य से, केवल काकु के द्वारा प्रकट किया जा सकता है। श्लेष से अभिप्राय अनेकार्थवाची शब्द के प्रयोग से है।

ग) वक्रोक्ति में श्लेष की प्रधानता रहती है।

उदाहरण-

"नारीणामनुकूलमाचरति चेज्जानासि कश्चेतनो
वामानां प्रियमादधाति हितकृन्नैवाबलानां भवान्।
युक्तं किं हितकर्तनं ननु बलाभावप्रसिद्धात्मनः
सामर्थ्यं भवतः पुरन्दरमतच्छेदं विधातुं कुतः"।।

अर्थात् (वक्ता) यदि तुम स्त्रियों के (नारीणाम्) अनुकूल आचरण करते हो समझदार (बुद्धिमान्) हो। (श्रोता) यदि तुम शत्रुओं के (न + अरीणाम्) अनुकूल आचरण नहीं करते हो तो बुद्धिमान् हो, (यह अर्थ लगाकर उत्तर देता है कि) कौन बुद्धिमान् (चेतनः) व्यक्ति विरोधियों का (वामानाम्) प्रिय करता है? (वक्ता) तो क्या आप अबलाओं-नारियों के (अबलानाम्) हितकारी (हितकृत्) नहीं है? (श्रोता) बल के अभाव के लिए प्रसिद्ध (निर्बल रूप से प्रसिद्ध) दुर्बलजन के हित का विनाश क्या उचित है? (वक्ता) अरे!

(बलासुर के विनाश करने में प्रसिद्ध) इन्द्र के अभिमत (अभीष्ट) का विनाश करने का सामर्थ्य आप में कहाँ है?

स्पष्टीकरण-

यहाँ पर वक्ता ने 'नारीणाम्' पद कामिनी (स्त्रीजन) अर्थ में प्रयुक्त किया था, किन्तु श्रोता ने इस पद को 'न+अरीणाम्'-इस प्रकार तोड़कर शत्रुपरक अर्थ किया और 'वामानाम्' का अर्थ स्त्रीपरक न लेकर शत्रुपरक अर्थ ले लिया कि कौन बुद्धिमान् शत्रुओं का प्रिय करता है?तब वक्ता 'वामानाम्' का अर्थ स्त्रीपरक लेकर पूछता है कि आप अबलाओं के (अबलानाम्) हितकारी (हितकृत्) नहीं हैं? किन्तु श्रोता इसका अर्थ यह लगाता है कि क्या आप (अबलानाम्) बलहीन दुर्बलों के हितकर्तक नहीं हैं। इस प्रश्न का उत्तर देता हुआ वह कहता है कि बलाभाव से प्रसिद्ध स्वरूप वाले (दुर्बल या अबला) के हित का नाश करना (हितकर्तन) क्या उचित है? किन्तु वक्ता इसका अर्थ बल (बलासुर) के अभाव (विनाश) के कारण प्रसिद्ध स्वरूप वाले इन्द्र ग्रहण करता है और उस वाक्य का अर्थ यह करता है कि क्या इन्द्र का हितकर्तन (हित का विनाश करना) उचित है? इस पर प्रथम वक्ता फिर पूछता है कि इन्द्र के अभिमत (अभीष्ट) अर्थ के नाश करने का सामर्थ्य आप में कहाँ है? अर्थात् बलासुर विनाशी इन्द्र की इच्छा का विनाश करने का सामर्थ्य आप में कहाँ है?